दृष्टि The Vision

Mentorship Program
Mukherjee ..agar

हिन्दी साहित्य

टेस्ट-2

(प्रश्न पत्र-I)

DTVF / OPT-24 HL-2402

निर्धारित समय: तीन घंटे Time Allowed: Three Hours	अधिकतम अंक : 250 Maximum Marks : 250

नाम (Name): प्रेमसिंह मीना

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address)

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): HL.2402 - 19/07/2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

1	1	3	2	5	5	6

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ **टिप्पणी** (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) शृंगारिकता के धरातल पर रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त कविता का अंतर

रीतिकालीन साहित्य अपनी शृंगारिकता व मुक्तक काव्य को लेकर सुनहरा समय रहा है प्रमुखतः तीन प्रकार का काव्य रचा गया ① रीतिबद्ध, ② रीति सिद्ध व ③ रीति मुक्त।

रीतिबद्ध काव्य में कवि पहले एक ~~सिद्धांत~~ काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त की व्याख्या करते थे उसके बाद एक उदाहरण देते हैं

जबकी रीतिमुक्त काव्य किसी भी तरह की रीतियों से स्वतंत्र होकर रचा गया

शृंगारिकता में अन्तर

रीतिबद्ध	रीति मुक्त
① देहमूलक शृंगार रस कविता के केन्द्र में:— "चिकहै ~~[illegible]~~ चाँदनी है, चिरागन की माला है..	① सामान्यतः भक्ति मूलक शृंगार रस प्रधान कविता उदा. - रसखान की कविता

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाषः 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेलः help@groupdrishti.in :: वेबसाइटः www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(2) दरबारी कविता शिल्प शास्त्रीय सम्प्रदाय की स्थूलता कविता के केन्द्र प्रमुखतः - मुख्य

(2) भक्ति रस कविता के केन्द्र में घनानंद। अनुभूति की सच्चाई की कविता।

(3) वियोग श्रृंगार की कविता मात्र विरह के गहनता व गंभीरता नहीं -
"विरह बनाओ रोग पावस बनाओ।
पावस बनाओ रोग
विरह बनाओ

(3) घनानंद अपने कवियों में अपने प्रियतम के वियोग में सर्वस्व समर्पण की भावना - प्रेम की पीर का काव्य।

(4) भक्ति भेदभाव के कृष्ण व गोपियों के फाग का वर्णन
"गोपीक के संग भीगि सावरो"

(4) रीति मुक्त काव्य में श्रृंगार में वात्सल्य संयोग रस अधिक है कृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन

अतः रीतिबद्ध व रीति मुक्त काव्य दोनों धाराएं श्रृंगारिकता को अपने-अपने तरह से धारण करती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) इप्टा का परिचय और महत्त्व

इप्टा (IPTA) : इंडियन पीपुल्स थियेटर एसोसिएशन" की स्थापना यूरोप के पीपुल्स थियेटर के आधार पर की गई थी। इप्टा का मुख्यालय बम्बई में खोला गया। मुख्यालय पृथ्वी पारसी थियेटर से लिया।

इप्टा ने भारतीय रंगमंच के विकास अहम योगदान दिया। इप्टा से जुड़े प्रमुख कलाकारों में नारायण प्रसाद बेताब, जोहरा सहगल, आगा हश्र, पृथ्वीराज कपूर, राधेश्याम इत्यादि प्रमुख थे।

इप्टा द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले मुख्यालय नाटक पारसी थियेटर से प्रेरित तड़क-भड़क, तथा गायन व पर्दों के प्रयोग पर

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

आधारित थी)

इप्टा ने भारतीय रंगमंच की दुनिया को आधुनिक थियेटर की दुनिया में अवतार कराया था आगे जाकर पृथ्वी थियेटर, द मार्डन आर्ट थियेटर व राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय जैसे संस्थानों को प्रेरणा मिला।

कुल मिलाकर इप्टा ने थियेटर की दुनियाँ में वही काम किया जो नाट्य लेखन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया था।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) मनोवैज्ञानिक कहानी

मनोवैज्ञानिक कहानी आंदोलन सिग्मंड फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद पर आधारित थी जिसने मनुष्य के चेतन, अवचेतन व अचेतन मन व इड, ईगो व सुपर ईगो पर आधारित अन्तर्मन की गांठों को खोलने का प्रयास किया।

प्रमुख मनोवैज्ञानिक कहानीकारों में वात्स्यायन अज्ञेय, जैनेन्द्र, कमलेश्वर, मोहन राकेश इत्यादि प्रमुख थे।

मनोवैज्ञानिक कहानी की विशेषताएं

1. कहानी की विषय वस्तु मनुष्य की अन्तर्मन तथा शहरी मध्यम वर्ग की काम चेतना।

2. पात्र व चरित्रों में अन्तर्संघर्ष: अपने आप से लड़ते हैं - अंतर्द्वंद्व

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(3) वैवाहिक जीवन की ऊबता व खोखलापन को उजागर करना - अज्ञेय की कहानी - रोज 'गैंग्रीन' नये पन से डर जीवन की नीरसता'

(4) प्रमुख समय यौन इच्छा व नैतिकता की कहानी।

शिल्पगत विशेषताएं

(1) कथानक का ह्रास तथा घटनाएं बहुत कम - विश्लेषण अधिक

(2) चेतना शैली, उत्तम पुरुष शैली तथा चिंतन मनन।

(3) भाषा - प्रतीकात्मक तथा काव्यात्मक भाषा -

(4) मनोविज्ञान - अकादमिक - फ्रायड युंग

अत: मनोवैज्ञानिक कहानियों ने ~~मनुष्य~~ मध्य वर्गीय आदर्श का भी व्यक्ति जीवन की समस्याओं को समाज के सामने रखा।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) हिन्दी कहानी के विकास में चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' प्रेमचन्द पूर्व हिन्दी कहानी के युग के प्रमुख कहानीकार थे। गुलेरी जी की प्रमुख कहानी है 'उसने कहा था' जो प्रेम, त्याग, प्रतिबद्धता तथा समर्पण की प्रतिमूर्ति है

गुलेरी जी का हिन्दी कहानी को योगदान

(1) 'उसने कहा था' कहानी में पहली बार पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक) पद्धति का प्रयोग।

(2) हिन्दी कहानी में यथार्थवादी गुणों का आगमन।

(3) कथानक शुरुआत, मध्य व क्लाइमैक्स में विभाजित।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(4) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद - लहना सिंह अपनी पूर्व प्रेमिका के पति की रक्षा करते हुए बलिदान देता है

शिल्पगत ~~विशेषता~~ योगदान

(1) ~~ख~~ खड़ीबोली हिन्दी के विकास में राजस्थानी व पंजाबी का पुट।

(2) पूर्वदीप्ति रचना पद्धति

(3) भाषा - नाममीकृत तकनीकी

अतः गुलेरी जी ने न केवल ~~शुरुआती~~ हिन्दी कहानी अपितु 'ओउम जय जगदीश हरे' जैसी कालजयी ~~क~~ आरती लिखकर सम्पूर्ण हिन्दी जगत के विकास में अतुलनीय योगदान दिया है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सिद्ध साहित्य की प्रवृत्तियाँ

'सिद्धों द्वारा रचा गया साहित्य विशेष साहित्य नहीं है अपितु अपने सम्प्रदाय के प्रचार हेतु लिखे गये पदों का संकलन मात्र है।'

सिद्ध साहित्य में धार्मिक आडम्बर व कर्मकाण्डों का विरोध किया गया है

" पंडित सअल सत्त बक्खाणइ, देहहि बुद्ध बसन्त ण जाणइ।"

सिद्धों ने कायायोग तथा प्रवृत्ति मार्ग पर अधिक जोर दिया। तथा भक्ति की पंचमकार पद्धति (मदिरा, मैथुन, मत्स्य, मुद्रा) का अनुभव किया।

सिद्ध साहित्य में जातिगत आडम्बर तथा छुआछूत का विरोध

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

क्रिया। अधिकांश सिद्ध साहित्य चर्यापदों के रूप में है जो कि मुक्तक प्रकार का है। प्रमुख सिद्धों में सरहपा, शबरपा, लुइपा, कन्हपा इत्यादि प्रमुख है।

सिद्धों का योगमूलक भक्ति पद्धति ही आगे जाकर नाथों व कबीर की उलटबाँसियों के रूप में प्रसिद्ध हुई।

अतः सिद्धों ने शुरुआती भक्ति में अपभ्रंश व अवहट्ट भाषा के साहित्य की रचना की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न या के अतिरिक्त कुछ लिखें।

ease do not write thing except the estion number in space)

2. (क) प्रेमचन्द की कहानियों के रचना-शिल्प पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
estion number in
s space)

(ख) पृथ्वीराजरासो के महाकाव्यत्व पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रासो काव्यों की भाषा पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

3. (क) 'छायावाद पलायन का काव्य है।' इस मत पर विचार कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।
ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।
(Please don't write
anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space

Copyright – Drishti The Vision Foundation

ृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी सूफीकाव्य परंपरा में 'मधुमालती' के वैशिष्ट्य का निरूपण कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

यया इस स्थान में प्रश्न
ख्या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी के नवगीत आन्दोलन का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
ything except the
estion number in
s space)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write
anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) प्रगतिवादी कविता की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रगतिवादी कविता आंदोलन 1936 में प्रगतिशील संघ की स्थापना के साथ सज्जाद जहीर इत्यादि के प्रयासों द्वारा शुरू हुआ। यह काव्य मार्क्सवाद का साहित्यिक रूप था। प्रमुख प्रगतिवादी कवियों में - नागार्जुन, रामधारी सिंह दिनकर, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, अज्ञेय इत्यादि प्रमुख हैं।

प्रगतिवादी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

① शिल्प के स्थान पर संवेदना को महत्व - प्रगतिवादी कवि काव्य का प्रतिमान उसकी संवेदनागत गहराई तथा समाज के प्रति योगदान से करते थे।

② "विश्व और प्रतिद्वंद्वियों को मारिये गोली, मेरे साथ बोलिये [illegible] [illegible] बोली।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(2) कविता का विषय किसान, मजदूर तथा संघर्षरत ~~आम~~ आम आदमी तथा नायक सामान्य व्यक्ति।

(3) ~~[illegible]~~ किसान-मजदूर का गृहस्थी आधारित प्रेम श्रृंगार का मूल विषय—

" मिलकर वे दोनों प्राणी
दे रहे खेत में पानी।"

(4) कविता प्रमुख उद्देश्य समाज में तनाव पैदा करके अमीरों के प्रति क्रांति के लिए उकसाना तथा प्रत्येक शोषण का विरोध

" दो राह समय का रथ(ध) ~~[illegible]~~ (जुन)
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है
(दिनकर)

(5) प्रगतिवादी कविता के साम्यवादी ~~[illegible]~~ के प्रति ~~विशेष~~ लगाव तथा समर्थन का भाव दिखाई देता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

"लाल झण्डा है लाल साथियो"

(6) प्रगतिवादी कविता अपने मूल्यों में प्रत्येक शोषण, असमानता व अमीरी गरीबी भेद का विरोध करती है जैसे नागार्जुन की कविता - 'अकाल और उसके बाद'।

शिल्पगत प्रवृत्तियाँ

(1) कविता में फॉर्म की जगह कंटेंट को अधिक महत्व - शब्द-चयन, भाषा आम बोल-चाल की।

(2) प्रतीक, बिम्ब, अलंकारों के प्रति विशेष मोह नहीं।

(3) सीधी सरल व सहज भाषा तथा अंग्रेजी व उर्दू के साथ देशज शब्दों का खूब प्रयोग।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अतः प्रगतिवादी कविता अपने मूल्यों मार्क्सवादी व साम्यवादी कलेवर को लपेटे हुए शानदार काव्य है जिसने कविता का विषय छायावाद की आदर्शोन्मुख व उच्च वर्ग से एक झटके में आम मजदूर, किसानों को बना दिया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) जयशंकर प्रसाद के नाटक 'ध्रुवस्वामिनी' के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जयशंकर प्रसाद का आदि की नाटक परम्परा के आधार स्तम्भ है, तथा प्रसाद ने नवजागरण प्रेरणा से ओत प्रोत ऐतिहासिक - नाटकों की रचना अधिक की है। जिनमें चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, अजातशत्रु, ध्रुवस्वामिनी इत्यादि प्रमुख है।

ध्रुवस्वामिनी की रचना प्रसाद ने 1936 में की थी यही समय था जब प्रेमचंद ने कालजयी उपन्यास गोदान रचा था। ध्रुवस्वामिनी में प्रसाद ने नारी समस्या को प्रमुखता से उठाया है।

यदि नायक की परम्परागत धारणा के आधार पर देखें तो प्रसाद की यह एकमात्र रचना है जिसकी नायिका ध्रुवस्वामिनी अत्यन्त

Copyright – Drishti The Vision Foundation

सशक्त चरित्र है जो स्कन्दगुप्त की देवसेना व कामायनी की श्रद्धा से काफी अधिक मजबूत चरित्र है।

ध्रुवस्वामिनी मूल विषय विवाह-व्यवस्था तथा इसके पुरुष नारी सम्बंधों की समस्या को उठाया गया है। इसके प्रसाद अपने छायावादी कलेवर को छोड़ते हुए कुछ अलग रंग के दिखे है। प्रसाद का मानना है कि यदि पुरुष नकारा व अयोग्य हो तो महिला को मोक्ष प्राप्ति का अधिकार है। अर्थात वह उसे छोड़कर तलाक ले सकती है।

साथ ही प्रसाद ध्रुवस्वामिनी के यह भी कहते है कि यदि राजा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

अयोग्य हो तो जनता द्वारा उसे बदल दिया जाना चाहिए। तथा उसके स्थान पर योग्य शासक की नियुक्ति होना आवश्यक है।

अतः ध्रुवस्वामिनी में प्रसाद ने स्त्री स्वतंत्रता, मजबूत होती नारी के साथ देशभक्ति पूर्ण नवजागरण की प्रेरणा दी है।

ध्रुवस्वामिनी की नायिका स्वयं अपना भविष्य तय करती है और पहली बार हिंदी साहित्य में महिलाओं को निर्णय प्रक्रिया में समानता का अधिकार मिला था तत्कालीन मार्क्सवादी काव्य आंदोलन का प्रभाव भी था। कुल मिलाकर ध्रुवस्वामिनी एक ~~~~ ~~~~ समावेशी प्रभाव का नाटक है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) रामचंद्रिका की संवाद-योजना पर प्रकाश डालिए। 15

'रामचंद्रिका' केशवदास की सबसे प्रमुख ~~कृति है~~ कृति है जिसमें केशवदास ने रामभक्ति काव्य को लेकर एक अलग कलेवर सिद्ध किया है।

रामचंद्रिका की प्रसिद्धि जितना उनके अलंकार कौशल, छंद वैविध्य को लेकर है उससे कहीं अधिक उनकी संवाद-योजना से है।

रामचंद्रिका के भरत-कैकयी संवाद, रावण-लक्ष्मण संवाद, अंगद संवाद इत्यादि प्रमुख है।

आचार्य शुक्ल ने भी ~~केशव~~ रामचंद्रिका के भरत संवाद को रामचरितमानस की तुलना में बेहतर बताया है - यथा:-

" मातु कहाँ नृप तात? गये सुरलोकहि।
क्यों? सुत शोक लये।"

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

यहाँ एक ही पंक्ति में ~~दशरथ~~ दशरथ की मृत्यु, राम वन गमन तथा मृत्यु का कारण ~~सबकी~~ जानकारी केशव ने दी है यह केशव की ~~आप~~ अर्थगर्भित व ~~ग~~ गागर में सागर भरने की काव्य कला ही है।

आचार्य शुक्ल जी, द्विवेदी जी से लेकर अज्ञेय ने भी केशव की संवाद कौशल की प्रशंसा की है।

रामचंद्रिका में केशव का पांडित्य न केवल संवाद कौशल बल्कि अलंकार व छंद विविधता में भी दिखाई देता है अतः केशव के काव्य को संवाद कौशल के आधार पर परिपूर्ण काव्य माना जाता है जो आगे गद्य में मोहन राकेश जैसे नाटककार ही भर पाये।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: **10 × 5 = 50**

(क) संतकाव्यधारा और सूफीकाव्यधारा में अंतर

संतकाव्य धारा व सूफी काव्य धारा दोनो ही भक्ति कालीन काव्य धारा की दो प्रमुख प्रवृत्तिया रही है

संत व सूफी काव्य धारा में अंतर

संत काव्य धारा	सूफी काव्य धारा
① भाषा → पंचमेल खिचड़ी व सधुक्कड़ी, ब्रज, खड़ी,	② प्रमुखतः अवधी भाषा
② संतो ने अपना काव्य मुक्तक व पदों के रूप में लिखा — उदा- कबीर का बीजक	② सूफियों प्रमुखतः प्रबंधकाव्य की रचना की उदा जायसी - पदमावत कन्हावत,
③ संत काव्य में प्रमुख छंदो में दोहा, सोरठा, सवैया, चौपाई, हरिपद	④ छंदों में दोहा व चौपाई की कडवक बद्ध शैली. — पदमावत।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

④ प्रमुख कवियों में कबीर, दादू, रैदास तुलसी, मीरा इत्यादि प्रमुख है।

⑤ ईश्वर को प्रियतम, सर्वोच्च तथा ईश्वर सगुण-निर्गुण सभी रूपों की भक्ति,

⑥ संत काव्य भारतीय पुरुष देशी प्रभाव अधिक।

④ कवियों में जायसी मुल्ला दाऊद प्रमुख

⑤ निर्गुण ईश्वर अनअलहक, तथा खुदा प्रेमिका व बंदा प्रेमी

⑥ विदेशी इस्लामी प्रभाव।

अतः संत या सूफी काव्य धाराओं दोनो ने ही भक्तिकालीन काव्य के अप्रतिम योगदान दिया जिसमे रामचरितमानस व पद्मावत जैसे महाकाव्य के साथ साथ सूर के लीलापद व कबीर के पद प्रमुख है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दिनकर की कविता में ओज

दिनकर प्रगतिवादी कवियों में शामिल है दिनकर का काव्य ओज गुण युक्त है जो सभी को प्रेरित करने वाला काव्य है

दिनकर की प्रमुख कृतियां - रश्मिरथी, कुरुक्षेत्र, उर्वशी इत्यादि प्रमुख है

दिनकर की कविता ओज गुण

(1) दिनकर की कविताओ पर मार्क्सवादी काव्य प्रवृत्ति का प्रभाव है जिसके जागरण, क्रांति, बराबरी का भाव अधिक है

(2) दिनकर ने कुरुक्षेत्र में अपना युद्ध सम्बन्धी दर्शन प्रस्तुत किया जिसके वे अन्याय का विरोध करना वीरता तथा तटस्थता को कायरता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

मानते है

"पुण्य है विच्छिन्न कर देना वह
रहा तेरी तरफ जो हाथ है।"

(B) दिनकर राष्ट्रकवि और मंचीय
श्रोताओं को आधार बनाकर कविता
लिखते हैं जिससे उनके काव्य में
ओजस्ता आती है

"कभी तक वन में घूम-घूम
बाधा विघ्नों को चूम-चूम।
× × × × ×
भगवान कुपित होकर बोले
हा हा दुर्योधन बांध मुझे।"

अत: इसप्रकार राष्ट्रकवि दिनकर
के काव्य में ओज गुण की अधिकता
जो उन्हें विशेष स्थान प्रदान
करती है

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लिखें।

ease do not write
thing except the
stion number in
space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परंपरा में नाभादास का योगदान

नाभादास ने ब्रजभाषा में 'अपने ग्रंथ' 'भक्तमाल' की रचना की। इसमें नाभादास ने लगभग 200 कवियों के बारे में विवरण प्रदान किया है।

नाभादास रामानंद सम्प्रदाय से सम्बंध रखते थे।

हिंदी साहित्य इतिहास लेखन परम्परा में भक्तमाल का स्थान केन्द्रीय स्थिति रखता है। तथा शुरुआती ब्रज भाषा के कवियों में से 200 कवियों का विवरण उपलब्ध किया है। भक्तमाल को आधार बनाकर ही जार्ज ग्रियर्सन व मिश्र बंधुओं ने अपने हिंदी साहित्य के इतिहास के विवरणों को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रचना भी थी क्योंकि नाभादास ने अपने समय के लगभग प्रत्येक भक्ति को भक्तमाल में चित्रित किया हुआ था

अतः इस प्रकार नाभादास का शुरुआती हिन्दी साहित्य लेखन में प्रमुख स्थान है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

या इस स्थान में प्रश्न
या के अतिरिक्त कुछ
लखें।

ase do not write
thing except the
stion number in
space)

(घ) प्रकृतवादी हिन्दी उपन्यास

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) अष्टछाप

अष्टछाप कृष्णभक्ति काव्य धारा में आठ कृष्ण भक्त कवियों का समूह था जिन्हें अष्ट सखा भी कहा जाता था। इनमें 5 वल्लभाचार्य के शिष्य व 3 विट्ठलदास के शिष्य थे जिनमें सूरदास, कुंभन दास, छीत स्वामी इत्यादि प्रमुख थे।

अष्टछाप के कवियों का प्रमुख काम आठ प्रहरों में भगवान की सेवा करना व लीला पदों की रचना करना था।

अष्टछाप के इन कवियों में सूरदास अत्यन्त प्रमुख थे तथा इन्हें 'पुष्टिमार्ग का जहाज' कहा जाता था। सूरदास पहले दैन्य भाव से ईश्वर की भक्ति करते थे

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परन्तु वल्लभाचार्य के के उद्बोधक "सूर होके मोह घिघियात" के पश्चात वे माधुर्य भाव की भक्ति करने लगे।

अष्टछाप के कवियों ने अनेक लीलापदों की रचना की जिसके सूरदास की सूरसारावली, सूरसागर इत्यादि प्रमुख है।

अष्टछाप के कवियों ने ब्रज भाषा में कृष्ण भक्ति के लीला पद रचे-

" सूर सगुन लीला पद गावे "

अतः अष्टछाप के कवियों कवियों ने न केवल ब्रजभाषा बल्कि शिशिष्टाद्वैत मार्ग का भी प्रचार किया।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'नई कहानी' की शिल्पगत विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी आन्दोलन अमेरिका के 'न्यू स्टोरी मूवमेंट' से प्रेरित आंदोलन था जिसपर ज्याँ पाल सार्त्र, कामू व हाइडेगर के अस्तित्ववाद का प्रमुख प्रभाव था।

हिन्दी कहानी में कमलेश्वर, मोहन राकेश तथा राजेन्द्र यादव को नई कहानी का प्रणेता तथा 'परिन्दे' को पहली नई कहानी माना जाता है।

नई कहानी की शिल्पगत विशेषताएं

(1) कथानक व कथावस्तु :

नई कहानी में कथानक की पारम्परिक धारणा पूरी तरह समाप्त होकर कथानक ह्रास समाप्त ही हो गया है तथा इसके प्रारम्भ, मध्य व अंत जैसी व्यवस्था बिल्कुल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

नहीं है। नई कहानी में ~~कथा~~ कथानक किसी भी तरह के आदर्शवाद को बताने की जगह चरम यथार्थवादी कहानियाँ हैं।

कथावस्तु के आधार पर देखा जाये तो ये कहानियाँ शहरी मध्यम वर्ग की कहानियाँ हैं। तथा कहानियों की विषयवस्तु यौन समस्या, पारिवारिक समस्याएं, अवैध सम्बन्ध, अकेलापन, दाम्पत्य जीवन, व संत्रास की भावना है।

② **भाषा**: नई कहानियों की भाषा काव्यात्मक, प्रतीकात्मक व सरलता को धारण करने वाली है। ~~कई~~ कुछ कथाकारों ने पंजाबी व अंग्रेजी ~~की~~ के शब्दों का खुलकर प्रयोग किया है - कृष्णा सोबती, मोहन राकेश, कमलेश्वर इत्यादि।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

...ा इस स्थान में प्रश्न ...के अतिरिक्त कुछ ...खें।
...se do not write ...hing except the ...tion number in ...space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(3) प्रतीकात्मक व बिंबधर्मी :

" ~~शब्दों में~~ " इतनी लम्बी-लम्बी सड़के हैं पर ये सड़के कहीं नहीं जाती"
(खोई हुई दिशाएं - कमलेश्वर)

नई कहानी की भाषा में प्रतीक व बिम्बों का प्रयोग कविता की तरह प्रचुर मात्रा में किया है जिनमें 'टूटना' राजेन्द्र यादव, एक और जिंदगी, मोहन राकेश, परिन्दे इत्यादि प्रमुख कहानियाँ है।

(4) नई कहानियों में चेतना प्रवाह शैली, डायरी शैली (यही सच है मन्नू भंडारी), ~~विश~~ उत्तम पुरुष शैली इत्यादि नवीन प्रयोग किये गये

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

नई कहानी आंदोलन की कहानियाँ शहरी मध्यम वर्ग के पूर्ण यथार्थ को धारण करने वाली कहानियाँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) चन्द्रगुप्त नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'चन्द्रगुप्त' जयशंकर प्रसाद का प्रमुख ऐतिहासिक नाटक है। रंगमंच व नाटक एक दूसरे के पर्याय हैं तथा अभिन्न आतिंपकार (?) नाटक की सफलता का आधार उसकी मंचीयता के आधार पर देखते हैं। प्रसाद के नाटकों को लेकर हमेशा कलाकारों व नाटककारों के मध्य चुनौती रही है क्योंकि प्रसाद के नाटक में दृश्य विधान, अधिक पात्र, दुरूह भाषा, व अधिक गीत व समय की समस्या रंगमंच में रुकावट के रूप में देखी जाती है। परन्तु इसका कारण प्रसाद के नाटक नहीं बल्कि उनका रंगमंच व नाटक के मध्य सम्बंधों को लेकर दृष्टिकोण है - "रंगमंच के लिए नाटक नहीं बल्कि नाटक के लिए रंगमंच होना चाहिए"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चन्द्रगुप्त नाटक की रंगमंचीयता की समस्याएं :

① अंक व अधिक दृश्य - चन्द्रगुप्त के 6 अंक व 32 दृश्य हैं इस कारण बार-बार रंगमंच पर दृश्य परिवर्तन करने की समस्या है।

② चरित्र पात्र - चन्द्रगुप्त के चरित्रों की संख्या भी अत्यधिक है तथा कुछ गौण चरित्रों को अधिक महत्व दिया गया है जिससे नाटक के सम्बन्ध निर्वाह कमजोर होता है

③ गीत - 'चन्द्रगुप्त' के गीतों की अधिकता व लम्बाई भी अधिक है जिससे नाटक में अधिक समय लगता है

④ भाषा - प्रसाद की भाषा में नाटकीय चंचलता का अभाव है प्रेमचंद ने प्रसाद

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

की भाषा को कई मन मिट्टी से हवीनाथ 'बताता है' उसकी भाषा है

(5) अधिक समय - चन्द्रगुप्त के 5-6 घंटे लगते हैं।

(6) वर्जित दृश्य - हत्या, युद्ध, वाद इत्यादि के दृश्य विधान।

चंद्रगुप्त की रंगमंचीयता

~~हालांकि~~ हालांकि चन्द्रगुप्त की मंचीयता में समस्याएं हैं परन्तु उत्कृष्ट निर्देशक लोगों के द्वारा कार. काट कर तथा प्रोजेक्टर का उपयोग करें तथा अच्छे अभिनेताओं के साथ चंद्रगुप्त को रंगमंच पर साकार कर सकता है। स्वयं प्रसाद के चन्द्रगुप्त का मंचीय संस्करण 'अभिनय चन्द्रगुप्त' द्वारा इसका मंचन कराया। B.B. कारंत व शांता गांधी. का भी यही मानना है कि प्रसाद के नाटक मंचीयता की दृष्टि से सफल है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भीष्म साहनी के उपन्यासों में निहित सामाजिक चेतना पर प्रकाश डालिये। 15

भीष्म साहनी सामाजिक चेतना के प्रेमचन्द, उपेन्द्रनाथ अश्क की धारा के उपन्यासकार है भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में साम्प्रदायिकता, जातिवाद, छुआछूत, महिला भेदभाव व अत्याचार, गरीबी, किसानों की समस्याओं के साथ-साथ राजनीतिक भ्रष्टाचार व असंवेदनशीलता इत्यादि को उठाया है

भीष्म साहनी के प्रमुख उपन्यासों में तमस, नीलू नीलिमा नीलोफर इत्यादि प्रमुख है

सामाजिक चेतना के आधार पर देखा जाए तो भीष्म साहनी के कालजयी उपन्यास 'तमस' का महत्व अत्यधिक है।

- भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में विभाजन के समय की साम्प्रदायिकता

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न
के अतिरिक्त कुछ
खें।

se do not write
ing except the
on number in
pace)

की समस्या को चित्रित किया है जिनमें ~~दंगों~~ दंगा कराने में लेना दंगों में पीड़ित जनता का दर्द भी दिखाया है साहनी के सामाजिक चेतना को लेकर मुख्य निष्कर्ष निम्न है-

(1) साम्प्रदायिक दंगो में पीड़ित महिलाएं व निम्न वर्ग ही होता है

(2) दंगा कराने में भी निम्न वर्ग के लोगो का इस्तेमाल किया जाता है

(3) अंग्रेजो की फूट डालो व राज करो की नीति के कारण आपसी अविश्वास व साम्प्रदायिकता गहरी हुई

(4) भ्रष्टाचार व शोषण की प्रक्रिया अनवरत जारी है

(5) परिवार व समाज के महिलाओं को बराबरी आज भी दु:स्वप्न के समान है

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(6) राजनेता जनता की भावनाओं का प्रयोग हमेशा अपने स्वार्थ के लिए ही करते हैं

अतः भीष्म साहनी ने सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास धारा को 1970 के दशक में भी जिंदा रखा। इसी समय मन्नू भंडारी ने सामाजिक यथार्थवादी उपन्यास 'महाभोज' की रचना की। जो भीष्म साहनी की सामाजिक जवाबदेहिता को और गहरा करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारीलाल रीतिकालीन दौर के प्रमुख कवि है ग्रियर्सन ने बिहारी को समाहार क्षमता व अनुभावो के कारण यूरोप के सभी कवियो से बेहतर बताया है बिहारी ने एक मात्र रचना 'बिहारी सतसई की रचना' की तथा दोहा जैसे छोटे छंद का प्रयोग किया

बिहारी सर्वश्रेष्ठ क्यों ⇒

समाहार क्षमता - बिहारी की अनुभावों की समाहार क्षमता आश्चर्य चकित करती है एक ही दोहे में पूरी कहानी कहने का माद्दा:-

" कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात।
भौं भौन में करत है नैनन ही सो बात।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

श्रृंगार रस - बिहारी के काव्य में श्रृंगार रस का सौंदर्य अप्रतिम है -

"बतरस लालच लाल की मुरली धरई लुकाय,
सौंह करे भौंहन हँसे देन कहे नट जाय"

बिहारी का अलंकार कौशल -
बिहारी के काव्य में काव्य में अलंकारों का प्रयोग अत्यन्त सौंदर्य युक्त है -

कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाये बौराय जग या पाये बौराय।।
(यमक)

कहत-नटत, रीझत, खिजत, मिलत-खिलत लजियात
(अनुप्रास अलंकार)

"बिहारी न केवल श्रृंगार बल्कि आधिभौतिक विज्ञान के रंग परिवर्तन के प्रति भी ज्ञान रखते थे -

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिहारी राधा की ~~अव~~ भक्ति करते है -

" मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय
जा तन की ~~छ~~ झांई परे, श्याम हरित दुति होय।

बिहारी ने भक्ति विनय के साथ - साथ समाज ~~म~~ महिलाओं के प्रति पारिवारिक शोषण व ज्योतिष के धार्मिक आडम्बरो पर भी व्यंग्य किया है -

" कहति न देवर की कुमति × × × सुखाति जाय। (महिला शोषण)

'चितु पितु मारक जोग गुनि' (ज्योतिष पर व्यंग्य)

बिहारी ने न केवल श्रृंगार रस प्रधान रचनाए की अपितु अपने राजकीय ~~व~~ शासकीय कर्तव्यों को भी पूरा किया है। जब राजा जयसिंह नवोढ़ा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

रानी के प्रति अधिक व्यस्त होते है तथा राजकीय दायित्वों से विमुख होते है तो बिहारी उन्हें सचेत करते है—

"नहीं पराग नहीं मधुर मधु नहि विकास इहिकाल
अलि कली ही सो बंध्यो तो आगे कौन हवाल।"

अतः इस प्रकार बिहारी ने अपने लौकिक के सभी पक्षों को शामिल किया है जो उन्हें रीतिकाल का सर्वश्रेष्ठ कवि बनाता है।

रीतिकाल में बिहारी की टक्कर के यदि देखा जाये तो घनानंद एक प्रमुख कवि है हालांकि घनानंद के काव्य में भक्ति की गहनता बिहारी से अधिक है परन्तु काव्य की विविधता में बिहारी भारी पड़ते है। तभी कहा जाता है कि

"सतसैया के दोहरे ज्यो नाविक के तीर
देखन में छोटे लगे घाव करे गंभीर।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधे-अधूरे नाटक मोहन राकेश का आज का व अभी के लिए लिखा गया नाटक है। मोहन राकेश ने इसमें ~~[illegible]~~ महेन्द्रनाथ व सावित्री के माध्यम से वर्तमान पारिवारिक जीवन के खोखलेपन, सम्बंधों की टूटन व साथ रहने की घुटन की समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया है।

आधे-अधूरे की संवेदना

- महेन्द्रनाथ व सावित्री दोनों पति-पत्नी है जो एक-दूसरे को बिलकुल पसन्द नहीं करते तथा नफरत करते है।

आधे-अधूरे के मोहन राकेश ने वैवाहिक सम्बंधों के खोखलेपन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बनावटी सम्बंध, यौन असंतुष्टि तथा आपसी ~~अरु~~ ऊबपन नापसन्दगी को दर्शाया है।

अपनी यौन इच्छाओं की पूर्ति के लिए सावित्री अनेक लोगों से तकराती है परन्तु सभी को अधूरा ही पाती है तथा अन्त में लौटकर पति महेन्द्रनाथ के पास आकर रहने को विवश है।

साथ ही महेन्द्रनाथ भी उसके घर छोड़कर जाना चाहता है परन्तु चाहकर भी जीवन को परिवर्तित नहीं कर पाता।

मोहन राकेश ने बताया है कि जब वैवाहिक सम्बंध में आपसी सम्मान, विश्वास ना हो,

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

तब जीवन कितना खोखला व कुंठित हो जाता है तथा दोनों विवश हैं साथ रहने के लिए)

• मोहन राकेश के नाटक 'आषाढ़ का एक दिन का' कालिदास व बुद्ध वापिस नहीं आते जबकी महेन्द्रनाथ वापिस घर आ जाता है।

आधे अधूरे में मोहन राकेश के अस्तित्ववादी दर्शन के साथ लघुमानववाद, अजनबीपन, अकेलापन, वैराग्य व अधूरे निर्णय की समस्या को भी चित्रित किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य के वैशिष्ट्य को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

निर्मल वर्मा नई कहानी आंदोलन के प्रधान रहने के साथ-साथ एक कथा अन्यास व यात्रा साहित्य के भी अग्रणी हस्ताक्षर है।

निर्मल वर्मा ने अपना अधिकतर यात्रा साहित्य यूरोपीय यात्राओं को लेकर लिखा है जिनमें मेरी यूरोप यात्रा, मेरी ~~यूरोप स्लोवाकिया~~ युगोस्लो. वाकिया यात्रा इत्यादि प्रमुख है।

निर्मल वर्मा ने अपने यात्रा वृतान्तों में स्थानीय समाज, संस्कृति, रीति ~~रिवाजों~~ रिवाजों का विस्तृत चित्रण किया है।

" यूरोपीय समाज के विवाह सम्बंध व ~~अवै~~ बिना विवाह के पैदा हुए

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर

दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

बच्चों की भी तुलना भारतीय समाज से की है।

निर्मल वर्मा अपने यात्रा वृतान्तों में भारतीय सभ्यता व यूरोपीय सभ्यता की आपस में तुलना करते है। साथ ही यूरोपीय पर्यावरण व वातावरण की शुद्धता की तुलना दिल्ली के प्रदूषण से करते है-

"हवा इतनी साफ व ठंडी है कि मन करता है जेब में भरकर ले।"

अतः निर्मल वर्मा के यात्रा साहित्य में अज्ञेय, राहुल सांकृत्यायन के साथ-साथ यात्रा साहित्य की रचना करके। यूरोपीय समुदाय की सभ्यता, संस्कृति, रीति-रिवाज, समाज, मान्यताओं को

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

हिन्दी भाषी समुदाय से अवगत कराया। निर्मल वर्मा ने यूरोप के साथ-साथ एशिया के साहित्य इत्यादि को भी पाठकों को। अतः हिन्दी भाषा साहित्य के लिए अनुपम धरोहर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | 47/CC, बर्लिंगटन आर्केड मॉल, विधानसभा मार्ग, लखनऊ | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष: 011-47532596, 8750187501 :: ई-मेल: help@groupdrishti.in :: वेबसाइट: www.drishtiIAS.com

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ

do not write except the number in ce)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ

do not write
except the
number in
e)

कृपया इस स्थान में
कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न अतिरिक्त कुछ

do not write except the number in e)

(ख) 'जनवादी कहानी' का परिचय दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
अतिरिक्त कुछ

lo not write
except the
number in
)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) उन्नीसवीं सदी में हिंदी गद्य के विकास में प्रतापनारायण मिश्र के अवदान पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

स्थान में प्रश्न
नतिरिक्त कुछ

o not write
except the
number in

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in thi

Copyright – Drishti The Vision Foundation